भाग दौड़

सुबह आंख खुलते ही नौकर से पूछा, ''कितने बजे हैं ? ''

''सात !''

मुझे लगा, जैसे बिच्छू ने काट लिया हो। (मैंने आज तक बिच्छू नहीं देखा है लेकिन मां से उसके डंक की कई कहानियां सुनी है।)

''मुझे जल्दी क्यों नहीं जगाया ? अब जल्दी से चाय बनाओ।'' मुंह धोकर चाय पीने लगी तो मां भी पास आकर बैठ गई। मैं सोच रही थी कि चाय पीकर तैयार हो ट्यूशन पढ़ाने जाऊंगी। फिर आकर, नाश्ता खाकर स्कूल भागूंगी। काश आज मि.खरे मिल जाएं...।

चाय, समाप्त हुई...। उफ,टॉयलेट में पानी नहीं है, हाए-हाए।

''राजू, कल टंकी की मरम्मत क्यों नहीं करवाई ? क्या, प्लम्बर नहीं मिला ? यहां कोई चीज खराब होती है तो जल्दी मरम्मत की कोई कोशिश ही नहीं करता।''

वाशबेसिन पर हाथ धोते हुए मूंह से निकला, ''मर गयी।''

मम्मी भीतर से पूछ रही थीं. ''अब क्या हुआ, तुझे ?''

कैसे बताती कि लांड्री वाले से साड़ी नहीं मिल पाएगी। सोमवार के कारण दुकान बन्द है। अगर बताती हूं तो मां का भाषण शुरू हो जाएगा, ''इतनी साड़ियां हैं। फिर भी लांड्री वाली चाहिए। आजकल की लड़कियां हैं या...हम भी तो थे...।''

हाए ! जुबान बन्द, कान बन्द और मैं सीधी बाथरूम में। सत्यानाश ! गर्म पानी भी नहीं लाई। पता नहीं कहां से राजू प्रगट हुआ और गर्म पानी की बाल्टी नल के नीचे रख गया...! उफ, कितनी देर लगती है, नल से ठण्डा पानी निकाल कर गर्म पानी से मिलाने में। एक दो ट्यूशन ज्यादा मिल जाएं तो गीजर लगवा लूं। नहा कर निकली तो सुनाई दिया, ''भाई ! गैस खत्म।'' राजू मां को बता रहा था।

गैस खत्म यानी नाश्ते की छुट्टी। खैर, मक्खन ब्रेड से काम चला लेंगे लेकिन दोपहर का खाना ? मां ने दूध का गिलास हाथ में पकड़ाते हुए कहा, ''मैं गुलू को स्कूल लेकर जा रही हूं। तुम ट्यूशन पर जाते समय गैस बुक करवाती जाना। केरोसीन की तो तंगी चल रही है। राजू से कोयले मंगवा लेती हूं , मुझे थोड़ी देर लग जाएगी। रिश्ते वाली के यहां से संदेश आया है...।''

''संदेश आया है।'' सच! ये शब्द किसी भी कुंवारी लड़की के दिल की

धड़कन तेज कर देते हैं लेकिन मुझे ये शब्द इतनी पीड़ा पहुंचा चुके थे कि अब तो कान इस बात को सुनते ही नहीं...। पिता भी इसी चिन्ता में चल बसे। सज-धज कर लड़का देखने जाओ या यूं कहें खुद को दिखाने जाओ और फिर मायूस लौट आओ। कभी मैं उसे पसन्द नहीं तो कभी वह मुझे पसन्द नहीं। कभी दान-दहेज का लफड़ा और कभी अक्ल के दुश्मनों का अध्यापन कार्य को छोटी नजर से देखना।

मारो गोली, धड़कन को। मैं, आइने के सामने खड़ी होकर जल्दी-जल्दी तैयार होने लगी। सोचा, "दूसरी टीचर्स शायद दो-दो नौकरानियां रख कर जल्दी तैयार हो पाती होंगी। वह नई टीचर तो इतना सज धज कर आती है कि मेरी उस पर से नजर ही नहीं हटती। साड़ी की चुन्नटें, कितने सलीके से लगाती है। मुझसे तो इस कलफ लगी साड़ी के चुन्नट ही नहीं बनते...। मरने दो...देर हो गई।

"राजू, दूध-दूध...।" अरे दूध तो कबसे मेज पर रखा ठण्डा हो रहा है।" मैं, रूमाल पर इत्र लगा कर मेज की तरफ बढ़ी ही थी कि जल्दबाजी में इत्र की शीशी गिर गई। एक और मुसीबत! शुक्र है, शीशी टूटी नहीं। सीने पर लटके क्रॉस को चूम लिया। यहां वहां देखा। अच्छा हुआ कि मां गुलू को लेकर स्कूल जा चुकी थी। नहीं तो शुरू हो जाती, "कान्वेंट में क्या शिक्षा पाई कि अपना धर्म कर्म ही भूल गई है...।"

"थैंक गॉड।" बोलती हुई मैं दूध गटक बाहर निकल गई।

अभी तो गैस वाले के पास जाना है। "अरे, नौ तो नहीं बज गए राजू?" मैंने सीढ़ियों पर पहुंचकर पूछा।

जवाब सीढ़ियां उतरती पड़ोसिन ने दिया, "दो मिनट हैं नौ बजने में।"

रिस्ट वॉच में चाबी लगाती रोड पर पहुंची तो दिल दहल गया। एक सैकिण्ड की भी देरी हो जाती तो सिग्नल पर खड़ी मोटरों और बसों का रेला चलना शुरू हो जाता।

दिल की धक-धक सुनती हुई मैं, गैस वाले के पास जा पहुंची। तेज कदमों के साथ दिमाग भी तेजी से चल रहा था। बोली, "कल से शादी में आए हुए मेहमानों से घर भर गया हैं, मेहरबानी करके गैस जल्दी भेजना।"

मेरी कोरी कलफ लगी साड़ी को देखते हुए गैस बुक करने वाले ने एक खास मुस्कान मेरी ओर उछाली। मैंने दिल में कहा, "पागल कहीं का ! समझ रहा होगा, मेरी शादी है। दूसरी बार गैस बुक करवाने आऊंगी तो इसे बताऊंगी, वो मेरी भांजी की शादी थी... पर भांनजी तो अभी पैदा ही नहीं हुई है...।" फिर भी दिमाग को दाद देती, पसीना पोंछती ट्यूशन पर पहुंच गई। बच्चो की परीक्षा करीब थी। जल्दी-जल्दी उसे हर विषय में से खास-खास पढ़ाती चली गई। अब, पेट में चूहे दौड़ने लगे थे। दस बजने में

दस मिनट थे कि मैं खड़ी हो गई। बच्चा बोला, ''ज्योग्राफी की मेप प्वाईंटिंग रह गई है।''

''रहने दो न, बबलू। साढ़े दस बजे स्कूल पहुंचना है। इससे पहले, घर तक पैदल जाना है। कुछ पका होगा तो खाकर स्कूल भागना है...।''

कमाल ही हो गया। बच्चे की माँ बोली, ''आज पोए बनाए हैं टीचर, खाकर जाओ। ''

घर में गैस नहीं थी, यह तो पता ही था। इसलिए मना नहीं किया। पोए के साथ फ्राई आलू भी खाए। लेकिन अब पहुंचूं कैसे? हाए-हाए, दस बजे का सायरन तो रास्ते में ही सुन लिया। सीने में हू ,हू ,हू, हू होने लगी और मेरी टांगें तीन थी या चार, पता नहीं। भागती-भागती घर आ पहुंची। निश्चित रूप से , गैस अभी तक नहीं आया होगा। लेकिन मुझे हैरानी हुई जब गैस को रसोई में जलते देखा और खाना भी तैयार देखा। अरे वाह, गैस वाले को बताई हुई गप्प, काम आ गई। राजू ने बताया कि गैस वाला खास तौर से सिलेण्डर सिर पर रखकर लाया था और इनाम भी ले गया।

वाह, वाह! काम तो बना। ''राजू , लंच बाक्स में भोजन डालो।''

अब बस, स्कूल समय पर पहुंच जाऊं। बस से तीसरे स्टाप तक ही तो जाना है। हांफती कांपती लम्बे-लम्बे डग भरती जब स्कूल के आफिस रूम में पहुंची तो देखा कि चपरासी हाजिरी रजिस्टर लेकर जा रहा है। झपट्टा मारकर उससे रजिस्टर छीना और दस्तखत कर दिए। अब जाकर संतोष की सांस ली। मगरमच्छ के से मुंह में अपने जीवन की गति देखकर हंसी आने लगी। रूमाल मुंह पर रख कर हंसी दबाने लगी। लेकिन हंसी थी कि थम ही नहीं रही थी। सीधा टीचर्स रूम में पहुंची। दो टीचर्स फ्री पीरियड का लुत्फ उठा रहीं थीं। एक ने कहा, ''मुझे लगता है, उर्मिला की जल्दी ही शादी होने वाली है...।''

मैंने कहा, ''नई साड़ी देखकर?''

अब तो मुझे ठहाके लगाने का बहाना मिल गया। रोकी हुई हंसी का फौहारा बह निकला। मुझे इतना खुश देखकर दूसरी टीचर को भी इस मजाक में हकीकत दिखने लगी। वह बोली, ''शादी के बाद यह नौकरी तो नहीं छोड़ोगी न?''

मैं और ज्यादा ठहाके लगाने लगी। जैसे-तैसे हंसी पर काबू पाकर अपनी कक्षा में चली गई। लेकिन शाम के पांच बजते-बजते यह खबर पूरे स्कूल में आग की तरह फैल गई कि उर्मिला की शादी होने वाली है। अफवाह को भी जाने कौनसे पंख लगे होते हैं! सबकी निगाह मानो घूमफिर कर शादी के बारे में ही पूछताछ कर रहीं थीं। दिल में कहा, ''भाड़ में जाएं। इस भाग दौड़ वाली जिन्दगी में फुर्सत किसे है इन फालतू बातों के बारे में सोचने के लिए। मैं तो भागूं घर। अभी रास्ते में खरीददारी करनी है।

हाए-हाए, पर्स में वायर थैली डाली है कि नहीं? कल फलों सहित ही फ्रिज में रख दी थी...पर्स तो देखूं। ओह, मौजूद है। मम्मी ने शायद फल निकाल कर थैली मेरे पर्स में रख दी थी।''

दो-दो सीढ़ियां फंलागती नीचे उतरी तो देखा पूरी जमीन गीली थी। बेमौसम की बरसात जाने कहां से आई थी। तो फिर बस से ही बाजार जाऊं खरीददारी करने! शुक्र है, बस जल्दी मिल गई। लेकिन भीड़ व धक्कमधक्की। पर वाह, ऊपर वाली डेक पर खिड़की के पास खाली सीट। मानो राहत मिल गई हो। अरे यह क्या, यह तो हनी है।

''अरे हनी ! तुम, इस तरफ कैसे?'' अपनी सहेली अनिला से पूछा था मैंने।

''मेरे निकी से मिलो, आई मीन नारी।''

नारी ! मुझे हंसी आ गई। क्या तो चश्मा लगाया है? अरे बाप रे, यह तो मुझे ही देख रहा है जैसे...और दो अंगुलियां आगे बढ़ा दी हैं। ऐसी रंगीन मिजाजी पर क्यों न मन डोल जाए।

अनिला ने भाई को डांटते हुए कहा, ''यह उर्मिला है जो सह गई...मजाक की भी हद होती है।''

और यह जनाब अंगूठा दिखाते हुए बोले, ''उर्मिला इज दिस!''

अनिला ने चिढ़ कर कहा, ''तुम्हें पता भी है कि अंगूठा दिखाने का मतलब यहां क्या होता है? पता नहीं, कैसे कैसे अन्दाज सीखकर आते हैं यह विलायत वाले।''

''उर्मि ! सॉरी, मेरा मतलब था उर्मिला है, ए वन।'' नारी ने फिर से अंगूठा दिखाया।

''अरे,रे,रे। मुझे तो इसी स्टॉप पर उतरना है, बबलू।'' नारी को उसकी बहिन के पास वाली सीट सौंप कर, मैं बस से उतर गई।

''मां, तुम बहुत अच्छी हो।'' खरीददारी के बाद घर लौटकर मैं मां के गले से झूल गई। और फिर टाईट चाबी लगे स्प्रिंग वाले खिलौने के समान मैं हंसती चली गई थी। ठहाके लगाते हुए मैंने मां को दिनभर की भाग दौड़ का वर्णन सुनाया तो मां भी मेरे साथ हंसती चली गई।

अनुवाद : गायत्री

□□□